

VISAMANBAPU

Right from the Vedic times, India has enjoyed a rich spiritual tradition. The Indian scriptures, also cover a gamut of every human emotion and aspiration that have made a sublime contribution to Indian spiritualism. On account of this, India has always attained reverent place in the world.

India is not a piece of land but a mass of uplifting consciousness. In this majestic India, Paliyad, the pilgrimage place of faith of millions of devotees, is situated in the divine land of Gujarat. Paliyad is believed to be no less than Haridwar or any other place of pilgrimage.

Patamanbapu was childless after many years of marriage. He came across a yogic saint who was practising Sadhna in the caves of mountain Chandangiri. Looking at Patamanbapu's selfless service and dedication towards spirituality, the Saint blessed him and promised him that Ramdev Peer himself will take birth as his child.

Visamanbapu was born in the Kathi clan of Paliyad village, Saurashtra on the 5th day of Maha Sud, 1825 (Gujarati Calendar). His father's name was Shri Patamanbapu and mother's name was Aai Ranbai Ma. Visamanbapu is hailed as the incarnation of Ramdev Peer himself. He was famous for his saint like qualities from the childhood. Visamanbapu had set off on the path of sainthood under the guidance of Shri Gorakhbapu of Songadh and Shri Daanbapu of Chalala. He was believed to have super powers and there are numerous tales of his miracles.

Even in the midst of tumultuous Kali Yuga, powered by devotion and his spiritual qualities, he overcame the plight of many kings, ranks, aristocrats and visitors. At the age of about sixty years on 11th day of Bhadarva Sud, 1885 (Gujarati Calendar), he handed over the throne of Paliyad Thackeray to his nephew, Shri Laxmanbapu, son of Hada Boricha. In the 14th of Savant, Visamanbapu attained salvation.

Before his salvation, he instructed Laxmanbapu to serve the monks, saints and cows and to give a piece of bread to the visitor. These words of Visamanbapu later became the core philosophy and practise of Paliyad cult. After Visamanbapu, Laxmanbapu, Purna Thakar, Nirmalaba took his legacy

forward. Later, Unadbapu worked against the vices of society like alcohol, gambling, carnivory and established a prominent tradition of spiritual and virtuous society.

Visamanbapu established Yatradham on the bank of river Goma, 15 km from Botad. Free meals are offered to every devotee here. About 5000-6000 people visit Vihaldham, Paliyad every day. Also, the fair is held on the day of Amavasya (New Moon) and millions of devotees visit to the holy place to seek blessings of saints. A fully equipped food court has been set up at Paliyad to meet such an arrangement and to accommodate everyone in the the pangat without any discrimination on the basis of caste or creed.

In modern times, the organisation has taken up a number of activities for the welfare of people. These include, diagnosis camps and free treatment of patients, book aid to vulnerable students in society, financial support for further study of brilliant children, eye surgery, cowshed (gaushala) and ambulance facility.

Department of Posts is honoured to issue Commemorative Postage Stamp on Visamanbapu and appreciates his teachings for the spiritual upliftment of millions and for the welfare of the society.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure : Shri Brahm Prakash

Cancellation Cachet : Mrs Nenu Gupta

Text : Referenced from the contents provided by Gujarat Circle.



डाक विभाग
Department of Posts



विसामनबापू
VISAMANBAPU

विवरणिका BROCHURE

विसामनबापू

वैदिक काल से ही, भारत एक समृद्ध आध्यात्मिक परंपरा की धरोहर रहा है। भारतीय धर्मग्रंथों में भी, हर मानवीय भावना और आकांक्षा का एक सरगम शामिल है, जिसने भारतीय अध्यात्मवाद में एक उदात्त योगदान दिया है। इसी के कारण भारत को सदैव विश्व में सम्माननीय स्थान प्राप्त हुआ है।

भारत सिर्फ एक भूमि का टुकड़ा नहीं है, बल्कि मानवीय चेतना के उत्थान का एक समूह है। इस राजसी भारत में, लाखों भक्तों की आस्था का तीर्थ पालियाद, गुजरात की दिव्य भूमि में स्थित है। पालियाद को हरिद्वार या किसी अन्य तीर्थ स्थान से कम नहीं माना जाता है।

पातामणबापू शादी के कई साल बाद निःसंतान थे। उन्हें एक योगिक संत मिले जो चंदनगिरी पर्वत की गुफाओं में साधना कर रहे थे। पातामणबापू की निस्वार्थ सेवा और आध्यात्मिकता के प्रति समर्पण को देखते हुए, संत ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनसे वादा किया कि रामदेव पीर स्वयं उनके संतान के रूप में जन्म लेंगे।

विसामनबापू का जन्म सौराष्ट्र के पालियाद गांव के काठी कबीले में संवत् १८२५, महा सूद पंचमी (गुजराती कैलेंडर) के दिन हुआ था। उनके पिता का नाम पातामणबापू था और माता का नाम आई रणबाई मा था। विसामनबापू को श्री रामदेव पीर के अवतार के रूप में जाना जाता है। वे बचपन से ही अपने संत सदृश गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। विसामनबापू सोनगढ़ के श्री गोरखबापू और चलाला के श्री दानबापू के मार्गदर्शन में संतत्व के मार्ग पर चल पड़े थे। माना जाता था कि उनके पास महाशक्तियाँ थीं उनके चमत्कारों की कई कहानियाँ हैं।

भक्ति और अपने आध्यात्मिक गुणों से अशांति से भरे इस कलियुग के बीच भी, उन्होंने कई राजाओं, उमरावों, दुखिजनो और भक्तजनों की दुर्दशा दूर की। लगभग साठ वर्ष की आयु में संवत् १८८५ में भादरवा सूद ग्यारस (गुजराती कैलेंडर) के दिन, उन्होंने पालियाद ठाकर का सिंहासन अपने भतीजे लक्ष्मणबापूजो की हादा बोरिचा के सुपुत्र थे उनको को सौंप दिया। उसके बाद उन को मोक्ष की प्राप्ति हुई।

अपने परलोक गमन से पहले उन्होंने लक्ष्मणबापू को साधु संतों और गायों की सेवा करने और आगंतुक को रोटी खाए बिना न जाने देने का निर्देश दिया। विसामनबापू के ये शब्द बाद में पालियाद पंथ के मूल दर्शन और सिद्धांत बन गए। विसामनबापू के बाद, लक्ष्मणबापू, पूर्ण ठाकर, निर्मलाबा ने उनकी विरासत को आगे बढ़ाया। बाद में, उनडबापू ने शराब, जुआ, मांसाहार जैसी समाज की बुराइयों

के खिलाफ काम किया और आध्यात्मिक और सदाचारी समाज की एक प्रमुख परंपरा की स्थापना की।

विसामनबापू ने गोमा नदी के तट पर "विहलधाम" यात्राधाम की स्थापना की, जो बोटाद से १५ किमी की दूरी पर है। यहां हर भक्त को निःशुल्क भोजन कराया जाता है। विहालधाम, पालियाद में प्रतिदिन लगभग ५०००-६००० लोग आते हैं। साथ ही, अमावस्या के दिन मेला आयोजित किया जाता है और लाखों भक्त संतों का आशीर्वाद लेने के लिए इस पवित्र स्थान पर जाते हैं। इस तरह की व्यवस्था को पूरा करने और सभी को समायोजित करने के लिए पालियाद में एक पूर्णरूप से सुसज्जित फूड कोर्ट स्थापित किया गया है जहा "पंगत" में जाति या पंथ के किसी भेदभाव के बिना सबको भोजन करवाया जाता है।

आधुनिक समय में, इस यात्राधाम में लोगों के कल्याण के लिए कई गतिविधियाँ शुरू की गई हैं। इनमें डायग्नोसिस कैंप और मरीजों का मुफ्त इलाज, समाज में कमजोर छात्रों को किताबी सहायता, पढ़ाई में होशियार बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए आर्थिक मदद, आंखों की सर्जरी, गौशाला और एंबुलेंस की सुविधा, इत्यादि शामिल है।

विसामनबापू पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए डाक विभाग को प्रसन्नता हो रही है। लाखों लोगों के आध्यात्मिक उत्थान और समाज के कल्याण के लिए उनकी शिक्षाओं की डाक विभाग सराहना करता है।

आभार :

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण : श्री ब्रह्म प्रकाश

/विवरणिका

विरूपण केशे

पाठ

: श्रीमती नीनू गुप्ता

: गुजरात परिमंडल द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	: 201600
Stamps Printed	: 201600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00